गोवर्द्धन सागर

प्रस्तावना : पिछोला के दक्षिण में स्थित यह छोटी झील एक लिंक नहर द्वारा पिछोला से जुड़ी हुई है। गोवर्द्धन विलास एवं शिकारवाड़ी के आस–पास के क्षेत्र से प्राप्त वर्षा जल एवं पिछोला लिंक नहर इसके मुख्य जल स्रोत हैं। यह झील 2.59 वर्ग किलोमीटर (करीब 150 बीघा) क्षेत्र में ही फैली हुई है, लेकिन गोवर्द्धन विलास क्षेत्र के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। इसकी जलग्रहण क्षमता 0.25 मिलियन क्यूबिक मीटर है।

वर्तमान में इस झील के संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण के प्रशंसनीय कार्य हुए हैं। रिंग रोड के साथ इसके टापुओं, पाल और तटबन्धों को बहुत ही सुन्दर रूप दिया गया है एवं एक नव विकसित मनोरम पर्यटन स्थल के रूप में यह झील अपनी एक विशिष्ट पहचान बना चुकी है।

इस झील के चारों तरफ पूरा परकोटा बना हुआ है, कोई अतिक्रमण नहीं है एवं यह सीवरेज जल समाहित होने से भी मुक्त है। परन्तु यह झील भी अवांछनीय काँटेदार झाड़ियों, जलीय घास, काई आदि से फिर भी ग्रसित है। इसके एक छोर पर कमल फैलते जा रहे हैं एवं दूसरे हिस्से में डी–पार्क के चारों ओर गन्दगी पसरी हुई है। इसके अतिरिक्त झील को साफ रखने वाली मछलियों के आखेट हेतु ठेका दे दिया गया है जो कि झील को प्रदूषणमुक्त रखने के विपरीत है। इस तालाब की खासियत है कि यह कभी भी सूखता नहीं है एवं भीषण गर्मी में भी पानी बना रहता है। पिछोला एवं गोवर्द्धन सागर एक नहर के माध्यम से परस्पर जुड़े हुए हैं। यह नहर वर्तमान में भारतीय थल सेना की एकलिंगगढ़ छावनी के मध्य में स्थित है। इस नहर को और अधिक चौड़ा करने के प्रयास किये जाने चाहिये जिससे पिछोला के साथ गोवर्द्धन सागर भी देवास परियोजना के अतिरिक्त पानी से वर्ष भर भरा रह सकेगा।

इस झील को पर्यटन स्थल बनाने के लिए इसके पश्चिमी छोर पर बनाई गई रिंग रोड़ उस ओर स्थित पहाड़ियों से बहकर इसमें आने वाले पानी के बीच रोड़ा बन गई है। सड़क के दूसरे किनारे पर स्थित पहाड़ से जल के सुगम प्रवाह के लिए बड़ी नाली बनाकर अधिक संख्या में पुलिया बना देने से वर्षा जल झील में सीधे प्रवेश कर सकेगा एवं पानी की आवक भी बढ़ेगी। पिछोला से जुड़ी लिंक नहर से पानी की आवक बढ़ाने के लिए इसे समय–समय पर साफ करवाया जाना चाहिये।

इस झील के प्रति स्थानीय लोगों की आस्था भी जुड़ी हुई है। यहाँ प्रतिवर्ष अनन्त चतुर्दशी पर गणपति प्रतिमाओं का सांकेतिक विसर्जन श्रद्धा के साथ किया जाता है। जल संसाधन खण्ड उदयपुर ने 18 दिसम्बर, 2017 को 9 फीट भराव क्षमता वाले गोवर्द्धन सागर बांध को नगर निगम के आधिपत्य में दे दिया है।

गोवर्द्धन सागर	
स्थिति	उदयपुर से दक्षिण तरफ
निकटस्थ गांव/तहसील	गोवर्द्धन विलास, गिर्वा
देशान्तर	73°42'00'' पूर्वी देशान्तर
अक्षांश	24°34'00'' उत्तरी अक्षांश
नदी/नाला	बेड़च नदी
बाँध का प्रकार : कृत्रिम शुद्ध मीठे पानी की झील, चिनाई बाँध	
शुद्ध जलग्रहण क्षेत्र	2.59 वर्ग किलोमीटर
सकल जलग्रहण क्षेत्र	2.59 वर्ग किलोमीटर
औसत वार्षिक जल आवक	0.25 एमसीएम
सकल जल भराव क्षमता	0.25 एमसीएम
शुद्ध जल भराव क्षमता	0.25 एमसीएम
पूर्ण जलाशय स्तर	25.76 मीटर
अधिकतम् जल स्तर	26.21 मीटर
टैंक बंध स्तर	26.82 मीटर
सील स्तर	23.01 मीटर
पूर्ण टैंक गेज	2.74 मीटर/9 फीट
स्तर–जीटीएस/आर्बिटरी	आर्बिटरी
अधिशेष जल निकास व्यवस्था : बाई वॉश विथ मेशेनरी बेडबार	
– डिजाइन अधिकतम् प्रवाह	24.92 क्यूमेक
– वीयर का प्रकार व लम्बाई	वेस्ट वीयर, 22.86 मीटर

गोवर्द्धन सागर : गोवर्द्धन विलास – इतिहास के पृष्ठों से ...

उदयपुर शहर के दक्षिण में राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 8 (उदयपुर–अहमदाबाद) पर स्थित ऐतिहासिक ''गोवर्द्धन विलास'' अपने त्वरित विकास, विस्तार एवं आधारभूत सुविधाओं से परिपूर्ण होने के कारण उदयपुर नगर के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में है। यदि हम गोवर्द्धन विलास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करें तो इसका अतीत उतना ही स्वर्णिम एवं गौरवमयी रहा है जितना कि वर्तमान। लगभग 250 वर्षों पूर्व यहाँ चन्द छिट–पुट झोपड़ियों वाली सघन वनाच्छादित छोटी–सी बस्ती थी। महाराणा जगतसिंह द्वितीय (वि.सं. 1790–1808 ई.सं. 1733–1751) के धात्री भाई श्री माना धाबाई यहाँ पर रहते थे। श्री माना जी ने यहाँ एक सुन्दर एवं विशाल कुण्ड (बावड़ी) का निर्माण कराया एवं वि.सं. 1795 ज्येष्ठ सुदी 11 (ई.सं. 1738) को इसकी प्रतिष्ठा हुई।

गोवर्द्धन विलास का बदलाव मेवाड़ के 18वें महाराणा स्वरूपसिंह (ई.सं. 1842–1861) के शासनकाल में आया, जब उन्होंने गौ–सेवा की प्रबल भावना से सैकड़ों गायों की क्षमता वाली विशाल गौ–शाला मय पक्के कठौते (नाँद) निर्मित करवायी। महाराणा को गोवर्द्धन विलास की आबो–हवा इतनी सुहावनी लगी कि यहाँ पर एक सुन्दर महल बनवाकर वि.सं. 1972 (ई.सं. 1855) से वे यहीं पर बिराजने लगे। महाराणा पैरों की तकलीफ की असाध्य व्याधि से ग्रसित थे। उनके लिए यहाँ की जलवायु एवं आबोहवा ऐसी स्वास्थ्यवर्द्धक एवं अनुकूल सिद्ध हुई धीरे–धीरे उन्होंने यहाँ घुड़साल एवं हाथियों की लड़ाई हेतु ऊँची अवरोधक दीवार तथा फव्वारा युक्त एक कुदरत बाग निर्मित करवा दिया ताकि यह स्थायी शाही निवास स्थल और अधिक सुरम्य एवं सुहावना बन जाए। महाराणा की अत्यन्त प्रिय पासवान (उप पत्नी) ऐजाँबाई, जो कि बेजोड़ सुन्दर थी, महाराणा ने ऐजाँबाई के नाम पर राधा–कृष्ण का एक भव्य एवं विशाल मन्दिर बनवाया, जो एजन स्वरूप बिहारी मन्दिर के नाम से विख्यात हुआ एवं इस क्षेत्र की शोभा बढ़ा दी। धीरे–धीरे सरदार पासवानों की हवेलियाँ एवं सेवकों के लिए मकान बनने लगे। वर्तमान में यह मन्दिर गोवर्द्धन विलास क्षेत्र की धार्मिक गतिविधियों तथा स्थानीय लोगों की आस्था का प्रमुख केन्द्र है।

महाराणा ने गोवर्द्धन विलास के पश्चिम में 1.5 कि.मी. लम्बे एवं 1.0 कि.मी. चौड़े गोवर्द्धन सागर नामक एक मजबूत, सुन्दर एवं गहरे सरोवर का निर्माण करवाया। इस सरोवर के उत्तर–पूर्वी तट पर ''पशुपतेश्वर महादेव'' मन्दिर का निर्माण कराकर इस क्षेत्र एवं इस झील के सौन्दर्य में अभिवृद्धि की। गोवर्द्धन विलास स्थित ऐजन स्वरूप बिहारी मन्दिर, गोवर्द्धन सागर एवं पशुपतेश्वर महादेव मन्दिर, इन तीनों की प्रतिष्ठा वि.सं. 1914 ज्येष्ठ शुक्ला 9 (1 जून, 1857) को एक साथ हुई।

महाराणा स्वरूपसिंह जी ने गोवर्द्धन सागर के पश्चिमी तट पर बाँकी पहाड़ी की तलहटी तक विशाल क्षेत्र में ''शिकारबाड़ी'' नामक एक शिकारगाह बनवायी। शिकारबाड़ी सघन वनस्पति से आच्छादित असंख्य जंगली जानवरों से परिपूर्ण क्षेत्र था। इस परिक्षेत्र में जगह–जगह शिकार कक्ष के साथ मध्य में एक सुन्दर कोठी, बावड़ी और तलाई बनवाई। महाराणा के मन–मस्तिष्क में गोवर्द्धन विलास को चरणबद्ध एवं सुनियोजित तरीके से इस प्रकार विकसित करने की योजना थी कि गोवर्द्धन विलास एवं उदयपुर का एकीकरण हो जाए, पर अफसोस ई.सं. 1861 में ही महाराणा ने संसार त्याग दिया और उनकी वह स्वप्निल योजना साकार न हो सकी।

देश की आजादी के बाद यहाँ का शाही महल एवं इससे संलग्न परिसम्पत्तियाँ सरकार ने अधिगृहीत कर ली। गौ–शाला भवन को पुलिस थाना, मन्दिर को देवस्थान विभाग, गोवर्द्धन सागर को सिंचाई विभाग (वर्तमान में नगर निगम) को हस्तगत कर दिया गया। नगर निगम, उदयपुर ने गोवर्द्धन सागर का सुदृढ़ीकरण एवं सौन्दर्यीकरण कराकर विरासत में मिली छटा एवं खूबसूरती को

बरकरार रखते हुए उसमें अभिवृद्धि की। यहाँ का प्राचीन एवं विशाल कुण्ड, जो कभी यहाँ पेयजल का प्रमुख स्रोत था, आज वहीं अनुपयोगी एवं अनदेखा कर दिया गया है व कचरापात्र सा बन गया है, काई से अटा पड़ा है। शिकारबाड़ी आज भी राजघराने की मिल्कियत है जिसे अब चार सितारा होटल बना दिया गया है। शाहीमहल एवं कुदरत बाग को शिक्षा एवं भू–प्रबन्ध विभाग को सुपुर्द कर दिया गया है। किसी समय विलासित पूर्ण रह चुके इस भव्य प्रासाद की शाही चमक समुचित देखभाल एवं रखरखाव के अभाव में सिमट चुकी है।

पिछोला–गोवर्द्धन सागर लिंक नहर : इस लिंक नहर को इस प्रकार से चौड़ा किया जावें कि इस नहर के माध्यम से दोनों झीलें पूर्णतया वर्ष भर जुड़ी रहे तथा यह भी ध्यान रहे कि इससे एकलिंगगढ़ छावनी किसी भी रूप में असुरक्षित न हो। इस नहर को स्वरूप सागर एवं फतहसागर लिंक नहर के रूप में विकसित कर ऊपर से जाली से ढकने के साथ सुन्दर प्रकाश व्यवस्था करने से नौकायन भी सभी मौसम में संभव हो सकेगा।

आज गोवर्द्धन विलास नामक छोटा कस्बा उदयपुर शहर से पूर्णतया मिल गया है। शहर एवं गोवर्द्धन विलास के मध्य भारतीय थल सेना की विशाल एकलिंगढ़ छावनी बन गई है एवं इस कस्बे के पूर्वी छोर पर स्थित हिरण मगरी क्षेत्र के सेक्टर–13 व 14 पूर्णतया विकसित हो चुके हैं एवं दक्षिण की ओर शहर विकासोन्मुख है। गोवर्द्धन सागर पर्यटकों के लिए एक बेहतर डेस्टिनेशन है। उदयपुर डेयरी, मारवल वाटर पार्क, श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान मुक्ताकाश समवशरण तीर्थ, स्मृति वन, स्व. श्री सुन्दर सिंह भण्डारी स्मृति पार्क, पन्नाधाय जीवन दीर्घा, डी–पार्क आदि गोवर्द्धन विलास के सौन्दर्य में अभिवृद्धि कर रहे हैं।

पन्नाधाय जीवन दीर्घा : वर्तमान में गोवर्द्धन सागर नगर निगम के प्रयासों से एक सुन्दर झील के रूप में परिवर्तित हो गया है। इससे इसके वर्षभर भरे रहने की संभावना भी बढ़ी है। नगर निगम को जल संसाधन विभाग से स्थायी अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) प्राप्त कर गोवर्द्धन सागर में आमजन एवं सैलानियों के लिए नावें चलानी चाहिये। इससे नाव में सवार होकर झील के मध्य विकसित जहाजनुमा टापू एवं पार्क तक आना–जाना संभव हो सकेगा। गोवर्द्धन सागर के मध्य विकसित जहाजनुमा तीन मंजिला टापू सैलानियों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र बन रहा है। करीब 36 फीट ऊँचाई वाले इस टापू के प्रथम तल पर पन्नाधाय जीवन दीर्घा विकसित की गई है एवं दूसरे तल पर रेस्टोरेन्ट निर्मित किया गया है। तीसरे तल पर झील एवं आसपास के प्राकृतिक सौन्दर्य का सिंहावलोकन का स्थल बनाया गया है। मेवाड़ की महान् त्यागमूर्ति पन्नाधाय के बलिदान एवं शौर्य से जुड़ी गौरवगाथा से आमजन को रूबरू करवाने के उद्देश्य से "पन्नाधाय जीवन दीर्घा" का निर्माण वर्ष 2014 में किया गया। दीर्घा में पन्नाधाय के जीवन एवं बलिदान को विभिन्न मूर्तियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। बनवीर के पन्नाधाय के कमरे में आने पर उदयसिंह को छिपाकर अपने बेटे का बलिदान देने के दृश्य को अनावृत किया गया है। एक लघु फिल्म के माध्यम से भी पन्नाधाय के बलिदान को चित्रित किया गया है। पन्नाधाय जीवन दीर्घा शहर में एक नये पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हुआ है। इस पर्यटन स्थल को पर्यटकों के लिए अधिक लोकप्रिय बनाने हेतु नगर निगम एवं पर्यटन विभाग की ओर से सघन प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त स्वच्छता, सुरक्षा एवं सुविधाओं की उचित व्यवस्था एवं रखरखाव करना, दूसरे तल पर स्थित रेस्टोरेन्ट में जलपान की पर्याप्त सुविधा पीपीपी मोड पर विकसित करना, पन्नाधाय जीवन दीर्घा का नियमित रखरखाव एवं तस्वीरों में सुधार करने के साथ लघु फिल्म के स्थान पर पन्नाधाय के जीवन एवं उसके बलिदान पर आधारित 30 मिनिट का वृत्त–चित्र सशुल्क दिखाने की व्यवस्था की जानी चाहिये। इस हेतु नगर निगम को किसी इतिहास आधारित फिल्म निर्माता से संपर्क कर यह वृत्त–चित्र शीघ्र बनवाना चाहिये।

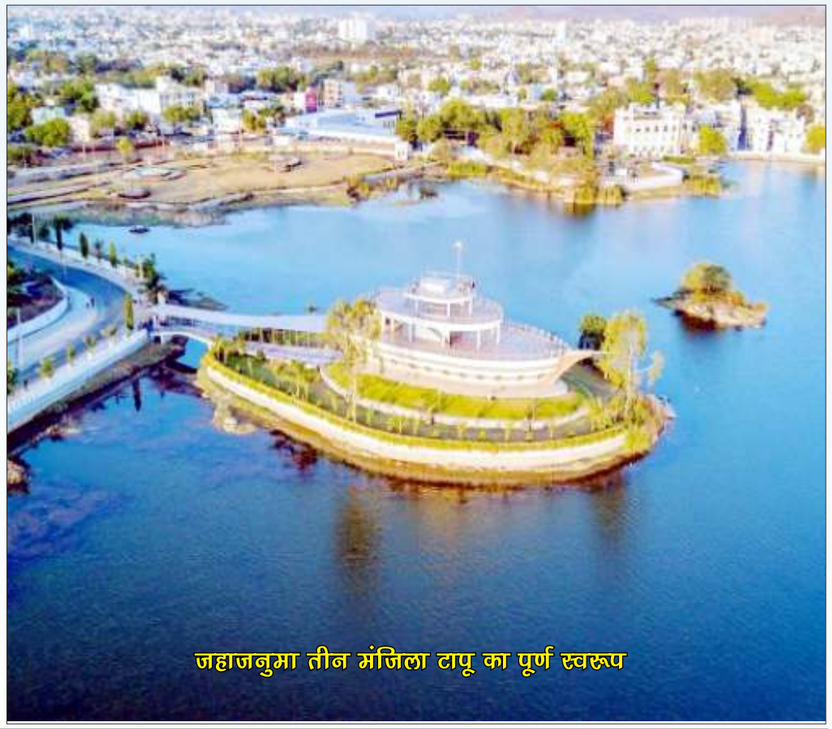
जहाजनुमा तीन मंजिला टापू का पूर्ण स्वरूप

गोवर्द्धन सागर – मनोहारी, सुन्दर एवं विहंगम् दृश्य

बप्पारावल

राजा गुहिल से गुहिल वंश ई.स. 566 में प्रारम्भ हुआ। गुहिल के वंशज नाग ने नागदा को अपनी राज -धानी बनाया । नाग के बाद क्रमशः शिलादित्य, अपराजित एवं महेन्द्र द्वितीय राजा हुए । इन्हीं महेन्द्र के बाद कालभोज राजा हुए, यही बप्पारावल के नाम से विख्यात हुए ।

बप्पारावल का जन्म ई.स. 713 में नागदा में हुआ था । वे जंगल में गायें चराते थे । प्रतिदिन शाम को जब गायें लौट कर आती थी तो एक गाय के थन में दूध नहीं मिलता। लोग बप्पा पर शक करने लगे ।

एक दिन बप्पा ने गाय का पीछा किया तो उसे आश्चर्य जनक दृश्य दिखाई दिया। गाय शिवलिंग पर दुग्धाभिषेक कर रही है तथा पास में हारित ऋषि खड़े है । हारित ने बप्पा को आशीर्वाद दिया और कहा कि पुत्र ! तुम पर महादेव की कृपा है। तुम इनकी आराधना करो, तुम्हारा कल्याण होगा।

युवक बप्पा शस्त्र व एकलिंग जी की साधना में लग गया। उसने आसपास के इलाकों से वनवासी भील व अन्य क्षत्रिय युवकों को एकत्र कर एक छोटी सेना का गठन कर लिया । हारित ऋषि के मार्गदर्शन में युवक बप्पा ने ई.स. 734 में चित्तौड़ राज्य प्राप्त किया। पश्चिम में हुए विदेशी आक्रन्ताओं को सीमा पार खदेड़ने के लिये बप्पारावल काबुल, कंधार, इराक-ईरान के सुल्तानों को पराजित कर उनकी कन्याओं से विवाह भी किया। जिनसे उन्हें 130 सन्तानें प्राप्त हुई वे नौ शेरा पठान कहलाई ।

वहाँ से लौटकर बप्पारावल चित्तौड़ आये। श्री एकलिंगनाथ के प्रति प्रबल भक्ति का भाव मन में होने के कारण राज्य अपने पुत्र खुमाण को सौंप कर ई. स. 752 में एकलिंग जी के पास के जंगलों में सन्यासी के रूप में साधना करने लगे । यहीं 753 ई. में 40 वर्ष की अवस्था में उनका स्वर्गवास हो गया । यह स्थान आजकल बप्पारावल के नाम से जाना जाता है ।

महाराणा उदयसिह

महाराणा सांगा के महारानी कर्मवती से दो पुत्र थे। पहला विक्रमादित्य व दूसरा उदयसिंह। उदयसिंह का जन्म 14 अगस्त 1521 ई.में चित्तौड़ में हुआ था। महाराणा सांगा की 1529 ई.में मृत्यु के पश्चात् रतनसिंह व बाद में विक्रमादित्य मेवाड़ के महाराणा बनें। बहादुरशाह के आक्रमण के कारण कर्मवती ने जौहर का निर्णय किया तथा अपने दोनों पुत्रों को पन्नाधाय के संरक्षण में बूंदी भेज दिया। बहादुरशाह के गुजरात लौटने पर विक्रमादित्य पुनः चित्तौड़ आ गये। यहां दासी पुत्र बनबीर ने उन्हें 1536 में बसंत पंचमी के दिन मार दिया।

पन्नाधाय ने बनबीर के षड्यंत्र को भांप कर उदयसिंह को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। अत्यन्त कारुणिक घटनाक्रम में पन्ना ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर गोद के पुत्र उदयसिंह की रक्षा की। कुम्भालगढ़ में उदयसिंह व पन्ना का आशाशाह ने स्वागत कर संरक्षण दिया। यहीं ई.सन् 1536 में उदयसिंह मेवाड़ के महाराणा घोषित किये गये। पाली के अखेराज सोनगरा की पुत्री जयवन्ती बाई से इनका विवाह हुआ। यह विवाह उदयसिंह के लिए वरदान सिद्ध हुआ ।

ई. सन् 1540 में उनके एक पुत्र हुआ जो महाराणा प्रताप के नाम से विख्यात हुआ । इसी समय उन्हें चित्तौड़ भी प्राप्त हुआ । चित्तौड़ की असुरक्षित भौगोलिक अवस्था के कारण उन्होंने अक्षय तृतीया, विक्रम संवत् 1610 (15 अप्रेल 1553) में उदयपुर नगर की स्थापना की तथा पास में उदयसागर झील का निर्माण 1559 ई.स. में प्रारम्भ किया । यहाँ पर प्रताप के पुत्र अमरसिंह के जन्म की खुशी में स्नेहभोज (गोठ) का आयोजन किया गया ।

1567 ई. में अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के समय रणनीति के तहत वे सपरिवार उदयपुर के मोती महल में आ गये। अकबर की चित्तौड़ विजय का महाराणा उदयसिंह को गहरा सदमा लगा । वे गोगुन्दा को नई राजधानी बनाकर वहीं रहे । यहां पर चार साल तक वे बीमार रहे । ई. सन् 1572 में होली के दिन 28 फरवरी को उनका गोगुन्दा में स्वर्गवास हो गया । उनके बाद महाराणा प्रताप राजगद्दी पर आरूढ़ हुए ।

'पन्नाधाय जीवन दीर्घा' : यहाँ मेवाड़ की महान् विभूति पन्नाधाय के जीवन, त्याग एवं बलिदान को विभिन्न कृतियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। बनवीर के पन्नाधाय के कमरे में आने पर उदयसिंह को छिपाकर अपने बेटे का बलिदान देने के जीवंत दृश्य को चित्रित किया गया है। इन कृतियों का रखरखाव, साफ–सफाई, रंग–रोगन आदि नियमित एवं व्यवस्थित रूप से होना चाहिये, तभी यह दीर्घा अपनी पहचान चिरकाल तक बनाये रख पायेगी तथा देशी–विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर पायेगी।

श्री सुन्दर सिंह भण्डारी स्वर्ण जयन्ती पार्क : भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता स्व. श्री सुन्दर सिंह भण्डारी एक प्रतिष्ठित भारतीय राजनीतिज्ञ थे। नगर निगम, उदयपुर ने गोवर्द्धन सागर पाल पर उनकी स्मृति में श्री सुन्दर सिंह भण्डारी स्वर्ण जयन्ती पार्क का निर्माण कर उनकी आदमकद मूर्ति स्थापित की। यह पार्क गोवर्द्धन सागर की पाल एवं उसके नीचे बने सामुदायिक भवन के पास निर्मित है। इसमें विशाल लोन, सुन्दर फूलदार क्यारियां, मोरपंखी, गोल्डन डूयरेन्टा, कड़वी मेहन्दी की सुन्दर कलाकृतिपूर्ण बनावटें, टेरीकोट

प्रतिमाएँ, जेटी, फव्वारें, शीतल जल गृह आदि के साथ वर्ष 2010 में इसका लोकार्पण किया गया। यह पार्क इको–फ्रेन्डली होने से उदयपुरवासियों विशेषकर हिरण मगरी क्षेत्र के लोगों के मध्य प्रातः एवं सांयकालीन भ्रमण एवं पिकनिक के लिए बहुत लोकप्रिय है। स्वर्ण जयन्ती पार्क के दक्षिण में कुछ विरान क्षेत्र पर पार्क का विस्तार करने से गोवर्द्धन सागर की सुन्दरता में और अभिवृद्धि हो सकती है। पार्क के नियमित रखरखाव पर समुचित ध्यान देने की आवश्यकता है।

भण्डारी सा. अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि को समर्पित करते हुए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक रहे। सभी से मित्रता के साथ आप अत्यन्त स्पष्टवादी थे। वे अपनी प्रकृति के कारण कार्यकर्ताओं में हेडमास्टर के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका जन्म 12 अप्रेल, 1921 को उदयपुर में एक जैन परिवार में हुआ। उनके पिताश्री डॉ. सुजान सिंह भण्डारी चिकित्सकीय पेशे से थे तथा सेवा का पैतृक गुण उन्हें विरासत में मिला। सिरोही से इंटरमीडिएट, डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर से बी.ए. एवं अर्थशास्त्र में एम.ए. करने के बाद विधि संकाय का अध्ययन किया। वे शिक्षा काल में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े एवं अंतिम सांस तक उस विचारधारा के प्रति वचनबद्ध रहे। उन्होंने 1942 में अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद मेवाड़ उच्च न्यायालय में वकालात शुरू की। वर्ष 1951 में जब भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई तब वे इससे जुड़े एवं 1951 से 1965 तक राजस्थान जनसंघ में महामंत्री का दायित्व निभाने के साथ 1963 से अखिल भारतीय मंत्री पद का दायित्व भी निभाया। वर्ष 1966–1972 के काल में राजस्थान से राज्यसभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए। इसके कुछ काल तक वे 'मीसा' के अन्तर्गत हिरासत में भी रहे। 1998 में उनका राज्यसभा का कार्यकाल समाप्त हुआ, उसी वर्ष उन्हें बिहार एवं 1999 में गुजरात का राज्यपाल नियुक्त किया गया। श्री भण्डारी सा. ने कार्यकर्ताओं के मध्य सरलता, सहनशीलता और मितव्ययता का उदाहरण पेश किया। वे प्रकृति से बहुत विनम्र इंसान थे। कहा जाता है कि वे ऐसे मूर्तिकार और कार्यकुशल क्राफ्ट्समेन थे जिन्होंने मानव, समाज और संगठन के साथ पार्टी कार्यकर्ताओं को एक अनुशासित प्रतिभा बनने हेतु प्रोत्साहित किया। दिनांक 22 जून, 2005 में उनका स्वर्गवास हुआ। उन्होंने अविवाहित रहते हुए स्वयं को मातृभूमि हेतु पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ समर्पित कर दिया। उनकी मृत्यु से देश ने एक प्रखर एवं असाधारण राष्ट्रवादी व्यक्तित्व, मेवाड़ ने अपना गौरव तथा भाजपा ने एक कुशल संगठक, चिन्तक व मार्गदर्शक खो दिया। हम सभी मेवाड़वासी उनकी प्रेरणास्पद जीवन यात्रा से गौरवान्वित है।

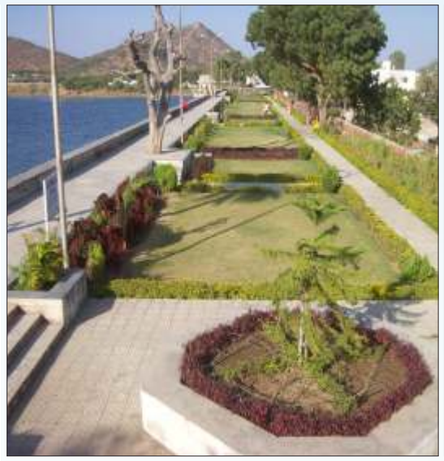

सुन्दर एवं सुव्यवस्थित रूप से विकसित पार्क : शहर के अन्य पार्क भी इसी तर्ज पर विकसित किये जा सकते हैं।

पार्क में टूटी टेराकोटा प्रतिमाएँ

गोवर्द्धन सागर के पानी में डूबी जेटी

पार्क में बंद पड़े फव्वारें

प्याऊ पर टूटे हुए नल

ऐसे सुन्दर पार्क में ऐसे दृश्य फिर से न दिखे, इस हेतु इसके उत्तम रख-रखाव के साथ इस पार्क की सुरक्षा के लिए पर्याप्त सुरक्षाकर्मी एवं सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था होनी चाहिये।

पन्नाधाय पार्क : नगर निगम, उदयपुर द्वारा यह पार्क 16 करोड़ की लागत से पूर्ण नियोजित एवं सभी आवश्यक सुविधाओं सहित विकसित किया गया है। इसमें पन्नाधाय, पुत्र चन्दन एवं राजकुमार उदयसिंह की भव्य प्रतिमा स्थापित है। यह वृहद लोन, सुन्दर फव्वारें, सामुदायिक भवन, सुविधाकक्ष, उत्तम प्रकाश व्यवस्था आदि से सुसज्जित पार्क है। परन्तु ऐसा आभास होता है कि इस पार्क के निर्माण कार्य अलग–अलग समय पर किये गये हैं, जिसमें सामंजस्यता की कमी स्पष्ट परिलक्षित होती है। इसमें किया गया कार्य कहीं उच्च गुणवत्ता का है, तो कहीं निम्न गुणवत्ता का। पार्क के उत्तरी एवं दक्षिणी किनारे पर सीमेन्ट कंकरीट के ढलवा पिलर पर खड़ी छतरियों का कार्य गुणवत्ता युक्त नहीं है। इन छतरियों को उदयपुर में उपलब्ध संगमरमर से राजसमन्द झील पर बनी छतरियों जैसा बनाया जा सकता था। उदयपुर में इस तरह के कार्य करने वाले दक्ष कारीगरों की कोई कमी नहीं है। पार्क के चारों ओर फैली कंटीली झाड़ियाँ, टाईफा ग्रास, काई, प्लास्टिक अवशेष आदि के कारण इसकी सुन्दरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, अतः इस पार्क के समुचित रखरखाव एवं सुरक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिये।

पन्नाधाय पार्क : एक सुव्यवस्थित स्वरूप

पन्नाधाय पार्क : संपूर्ण दृश्यावली के साथ गोवर्द्धन सागर से लगा हुआ सर्व सुविधायुक्त पार्क

काश! ये छतरियाँ संगमरमर से बनाई जाती।

दक्षिणी छोर पर कंटीली झाड़ियां एवं टाईफा ग्रास

स्मृति वन : वन विभाग एवं नगर निगम, उदयपुर द्वारा निर्मित स्मृति वन का लोकार्पण दिनांक 17 मई, 2015 को किया गया। यह टेरेस गार्डन के रूप में विकसित किया गया है। यहाँ विशाल लोन, विश्राम स्थल, फव्वारें एवं पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था उपलब्ध है। यह स्मृति वन बहुत सुन्दर रूप से नियोजित है लेकिन मात्र कुछ ही वर्षों में समुचित रखरखाव के अभाव में यह अपनी सुन्दरता खोता जा रहा है। अतः इस पार्क में एक सुव्यवस्थित कैफेटेरिया विकसित करने के साथ इसके समुचित रखरखाव पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना अपेक्षित है।

स्मृति वन : समुचित रखरखाव का अभाव

पुत्र चन्दन, पन्नाधाय एवं राजकुमार उदयसिंह

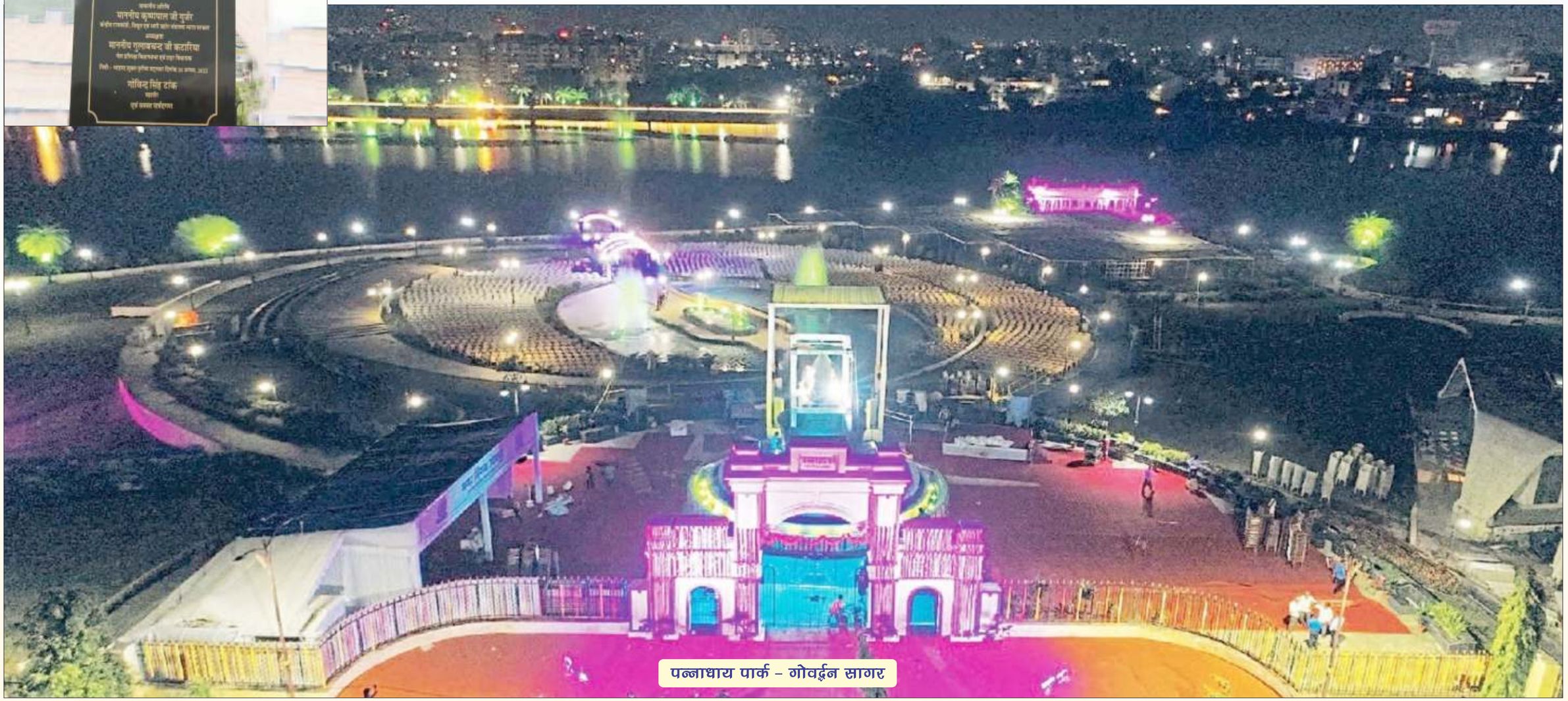

पन्नाधाय पार्क – गोवर्द्धन सागर

गोवर्द्धन सागर के प्रदूषित क्षेत्र : दक्षिणी उदयपुर स्थित इस लघु झील ''गोवर्द्धन सागर'' को प्रदूषण मुक्त और अधिक सुन्दर बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। झील के पूर्वी एवं दक्षिणी छोर पर स्थित कच्ची बस्ती को 'नेशनल प्लान फॉर कन्जर्वेशन ऑफ एक्वेटिक इको सिस्टम (एनपीसीए)' परियोजना के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग से वहाँ रहने वाले लोगों से परामर्श कर, उचित स्थान पर स्थानान्तरित करने का पूर्ण प्रयास किया जाना चाहिये। इस कच्ची बस्ती के कुछ लोगों को उनकी सहमति से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित कर झील के पूर्वी एवं दक्षिणी छोर पर रिंग रोड बनाई गई, जो एक सकारात्मक प्रयास रहा। इससे सीवरेज, गन्दा पानी, कचरा आदि झील में नहीं जायेगा एवं झील प्रदूषण मुक्त रह सकेगी। शेष बची हुई कच्ची बस्ती के स्थानीय नागरिकों से भी परामर्श कर आधारभूत सुविधाओं सहित उन्हें भी उचित स्थान पर स्थानान्तरित करने का प्रयास करना चाहिये जिससे यह झील भविष्य में कभी भी प्रदूषित नहीं हो सके। कच्ची बस्ती को स्थानान्तरित करने के पश्चात् यहाँ पर पर्यटकों के लिए अच्छी सुविधाएँ विकसित की जानी चाहिये। इससे यहाँ पर आमजन को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त झील के सभी प्रदूषित क्षेत्र एवं रिंग रोड़ को खरपतवार, झाड़ियों आदि से मुक्त कर सुनियोजित एवं व्यवस्थित पौधारोपण एवं फुटपाथ का निर्माण किया जाना चाहिये। इससे इस झील की सुन्दरता में आशातीत वृद्धि होने के साथ उदयपुर के मुख्य पर्यटन स्थल के रूप में इसे नई पहचान मिलेगी।

गोवर्द्धन सागर के पूर्वी किनारे का पूर्व स्वरूप

गोवर्द्धन सागर के पूर्वी किनारे का वर्तमान स्वरूप : इसके मध्य स्थित ऊंचे क्षेत्र को फव्वारें के साथ सुन्दरतम् स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

झील के मध्य स्थित ऊँचा क्षेत्र

गोवर्द्धन सागर के उत्तरी-पूर्वी किनारे का पूर्व स्वरूप

गोवर्द्धन सागर के उत्तरी-पूर्वी किनारे का वर्तमान स्वरूप

गोवर्द्धन सागर पूर्ण शुष्क अवस्था में : गोवर्द्धन सागर झील की गहराई बहुत सीमित है। इसे गर्मियों में पूर्ण रिक्त कर भूवैज्ञानिकों के परामर्श से एक–दो मीटर गहरा करना चाहिये। इससे अधिक जल संग्रहण के साथ मत्स्य पालन एवं जलीय खरपतवार पर नियंत्रण संभव हो सकेगा। वर्ष भर नाव संचालन में भी अवरुद्धता नहीं आयेगी। इस कार्य को राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना के अन्तर्गत किया जा सकता है। ईटें बनाने वाले उद्यमियों एवं किसानों को क्रमशः ईटें बनाने एवं खेतों में पणा भरने हेतु मिट्टी को स्वयं खोदकर ले जाने की स्वीकृति दी जानी चाहिये। इससे झील को निःशुल्क गहरी करना संभव हो सकेगा। साथ ही ईंट निर्माताओं एवं किसानों को उनके व्यवसाय में बिना किसी आर्थिक भार के सहयोग किया जा सकेगा।

ओवरफ्लो पॉइन्ट (रपट) : पिछोला तंत्र की इस छोटी–सी झील के पूर्ण भराव स्तर पर अतिरिक्त पानी की निकासी हेतु एक साधारण चिनाई (मेसेनरी) युक्त रपट बनाई गई थी। इस रपट से पूर्ण भराव पर इसका पानी छलकने के पश्चात् एक छोटे नाले से फूटा तालाब एवं सतोलिया नाले के माध्यम से बहता हुआ आयड़ नदी में समाहित होता है। इस रपट पर किसी भी प्रकार की यांत्रिक रुकावट से पानी की निकासी को नियंत्रित नहीं किया जा रहा है। अतः वर्षा एवं पिछोला झील से पानी की आवक होने के समय इस झील की पूर्ण भराव क्षमता से अतिरिक्त पानी इसकी रपट से बह जाता है। इस झील के अन्दर पूर्व में कच्चे घरों के निर्माण के साथ जंगली पेड़–पौधें एवं दक्षिण–पूर्व में घनी आवासीय बस्ती बसी हुई थी। वर्ष 2018 में इसके जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण के साथ ओवरफ्लो पॉइन्ट की लम्बाई, चौड़ाई एवं आकार में आमूलचूल परिवर्तन किया गया। झील की रपट पर दो पीलर एवं तीन मोखियों के ऊपर स्लेब डालकर एक नई पुलिया बनाकर दक्षिणी–पूर्व क्षेत्र की रिंग रोड बनाई गई। पुलिया के नीचे 30 × 30 मीटर क्षेत्र में मिट्टी भरकर पानी निकासी का पक्का मार्ग बनाया गया। इस निर्माण के दक्षिणी किनारे पर एक नाला भी बनाया गया है, जिसमें पास ही स्थित आवासीय कॉलोनी का गन्दा पानी बहता है।

इस निर्माण के कारण झील की पूर्ण भराव क्षमता 9 फीट से बढ़कर 9.4 फीट हो गई। रपट की लम्बाई छोटी करने के साथ इसके मध्य पीलर के कारण पानी की निकासी बाधित होकर कम हो गई यानी अब पानी की आवक अधिक होने पर झील का जल स्तर बढ़ने की पूरी संभावना रहेगी। इस प्रकार अधिकतम् जल भराव क्षमता बढ़ने के कारण मुख्य पाल की मेसेनरी वॉल से कुछ स्थानों यथा–महादेव मन्दिर एवं उसके आसपास से हल्का रिसाव हुआ जो कालान्तर में बढ़ने से पाल को खतरा हो सकता है। झील की जल भराव क्षमता में वृद्धि हेतु सभी तकनीकी पहलुओं, पाल की सुरक्षा एवं विशेषज्ञों के परामर्श को ध्यान में रखते हुए इसका निर्माण कार्य उच्च स्तर का कराया जाना चाहिये।

कुछ विशेषज्ञों के मतानुसार इसके ओवरफ्लो पॉइन्ट का पुनः निर्माण कर झील के पूर्ण भराव क्षमता स्तर से कुछ नीचे फतहसागर रपट पर लगे लोहे के गेट की तर्ज पर गेट लगाकर पानी की निकासी को नियंत्रित करने से पाल की सुरक्षा के साथ पानी का बहाव भी अधिक दर्शनीय होगा। इसके लिए गोवर्द्धन सागर की रपट के नाले के पुनर्निर्माण साथ पिछोला–गोवर्द्धन सागर लिंक नहर को और अधिक चौड़ा एवं गहरा करना होगा। पिछोला तंत्र में सीसारमा नदी से प्राप्त अतिरिक्त पानी को स्वरूप सागर एवं गोवर्द्धन सागर की रपट से निकालने पर ये दोनों वाटरफॉल और अधिक दर्शनीय एवं मनोहारी दृष्टिगत होंगे।

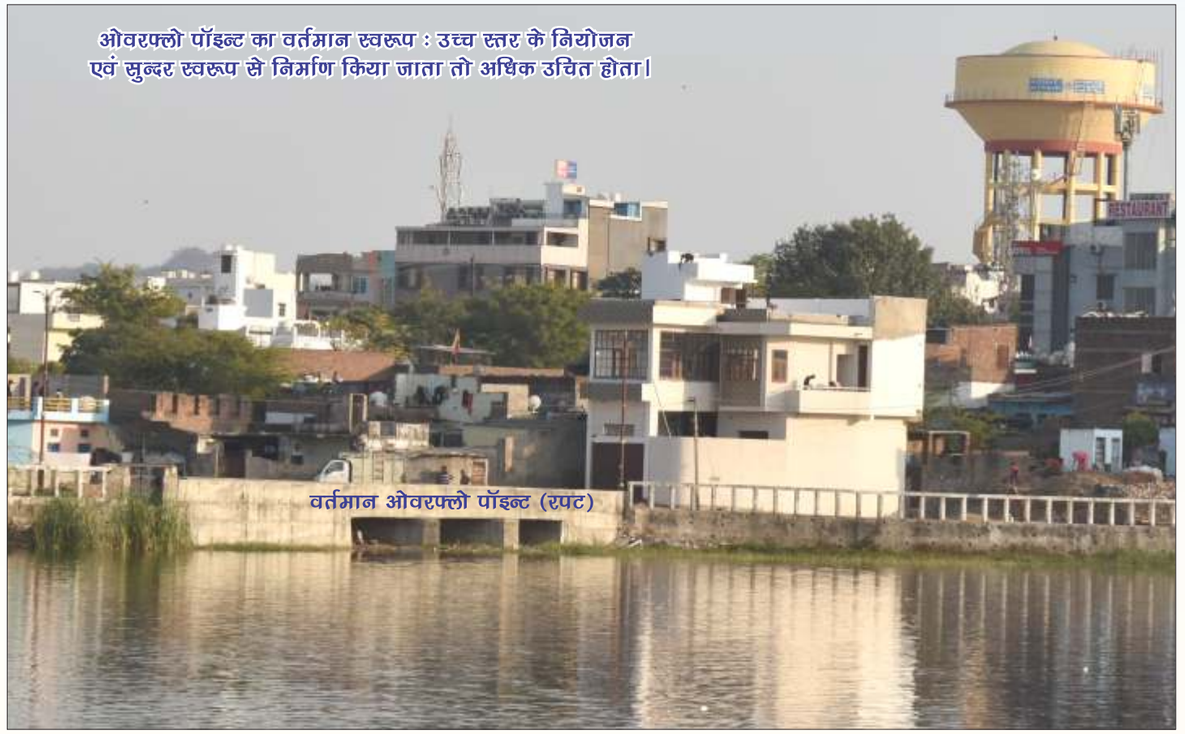

महत्वपूर्ण सुझाव : सैलानियों एवं शहरवासियों के लिए गोवर्द्धन सागर नया डेस्टिनेशन हब बन गया है। इसे और अधिक लोकप्रिय बनाने हेतु निम्नानुसार प्रयास अपेक्षित हैं :–

- जहाजनुमा तीन मंजिला टापू के दूसरे तल पर निर्मित रेस्टोरेन्ट को पीपीपी मोड पर चालू करना, पेयजल, शौचालय, व्यवस्थित पार्किंग, पन्नाधाय जीवन दीर्घा का नियमित रखरखाव एवं सुधार, स्क्रिन पर लघु फिल्म का नियमित प्रदर्शन, टापू का उचित रखरखाव, संपूर्ण परिसर में उन्नत सफाई व्यवस्था, उद्यानों का उचित रखरखाव एवं सुनियोजित प्रकाश व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।
- स्मृति वन, डी–पार्क, श्री सुन्दरसिंह भण्डारी स्वर्ण जयन्ती पार्क के उच्च स्तरीय रखरखाव के साथ इन्हें अलग–अलग प्रजातियों के पेड़–पौधों व फूलों एवं संगीतमय फव्वारों आदि से भी सुसज्जित किया जावे।
- बच्चों हेतु चिल्ड्रन पार्क एवं पर्यटकों तथा शहरवासियों के लिए एक सुनियोजित एवं उच्च स्तरीय फूड कोर्ट का भी निर्माण किया जाना उचित होगा।
- झील की सतह पर काई, प्लास्टिक की बोतलें, झाड़ियाँ आदि दृष्टिगत नहीं हो, इस हेतु जिस प्रकार से आवासीय कॉलोनियों में सफाई कर्मचारी नियमित रूप से साफ–सफाई का कार्य करते हैं, ठीक उसी प्रकार प्रतिदिन इस झील में भी नाव एवं आवश्यक उपकरणों के साथ सफाईकर्मी की नियुक्ति होने के साथ सुपरविजन स्टाफ की पूर्ण जिम्मेदारी एवं जवाबदेही तय की जावे। झील सदैव स्वच्छ एवं साफ रहे, इस हेतु पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिये।
- झील के किनारे पर स्थापित बंसियाँ समरूप होने के साथ टूट–फूट होने पर उनकी तुरन्त मरम्मत की व्यवस्था हो।
- रिंग रोड पर बंसियों के साथ–साथ एक अवरोध मुक्त फुटपाथ बनाया जाना चाहिये जिस पर स्थानीय नागरिकों के प्रातःकालीन भ्रमण के साथ पर्यटक भी पैदल चलकर इस झील के सुन्दर दृश्य का आनन्द ले सकें।
- बंसियों के साथ सड़क पर बनी फुटपाथ एवं इसके दूसरे किनारे पर एक जैसे पौधे लगाये जावें यथा–पीले व नीले रंग के गुलमोहर, अशोक, पेन्डूला, नीम आदि। इनकी समय–समय पर छँटाई के साथ सिंचाई की भी पर्याप्त व्यवस्था हो। विदेशी पौधों को उदयपुर की शस्य जलवायु में पूर्ण परखने के बाद ही रोपित किये जावे। यह फुटपाथ लाइट पोल रहित होनी चाहिये।
- गोवर्द्धन सागर में मछलियों की संख्या में वृद्धि हेतु उनकी उन्नत प्रजातियों के लार्वा प्रतिवर्ष छोड़े जाने चाहिये। यह कार्य नगर निगम एवं मत्स्य विभाग के सहयोग से किया जाना चाहिये। इस झील के पर्यटकीय महत्व को देखते हुए मछली पकड़ने हेतु प्रतिवर्ष ठेका देना कतई उचित प्रतीत नहीं होता है। झील में मछलियों के पर्याप्त संख्या उपलब्ध होने पर काफी हद तक झील प्रदूषण की समस्या से मुक्ति मिल सकती है।
- गोवर्द्धन सागर ओवरफ्लो पॉइन्ट रपट को फतहसागर के तर्ज पर पुनर्निर्माण कर ओवरफ्लो पॉइन्ट को अधिक आकर्षक बनाया जाना चाहिये।

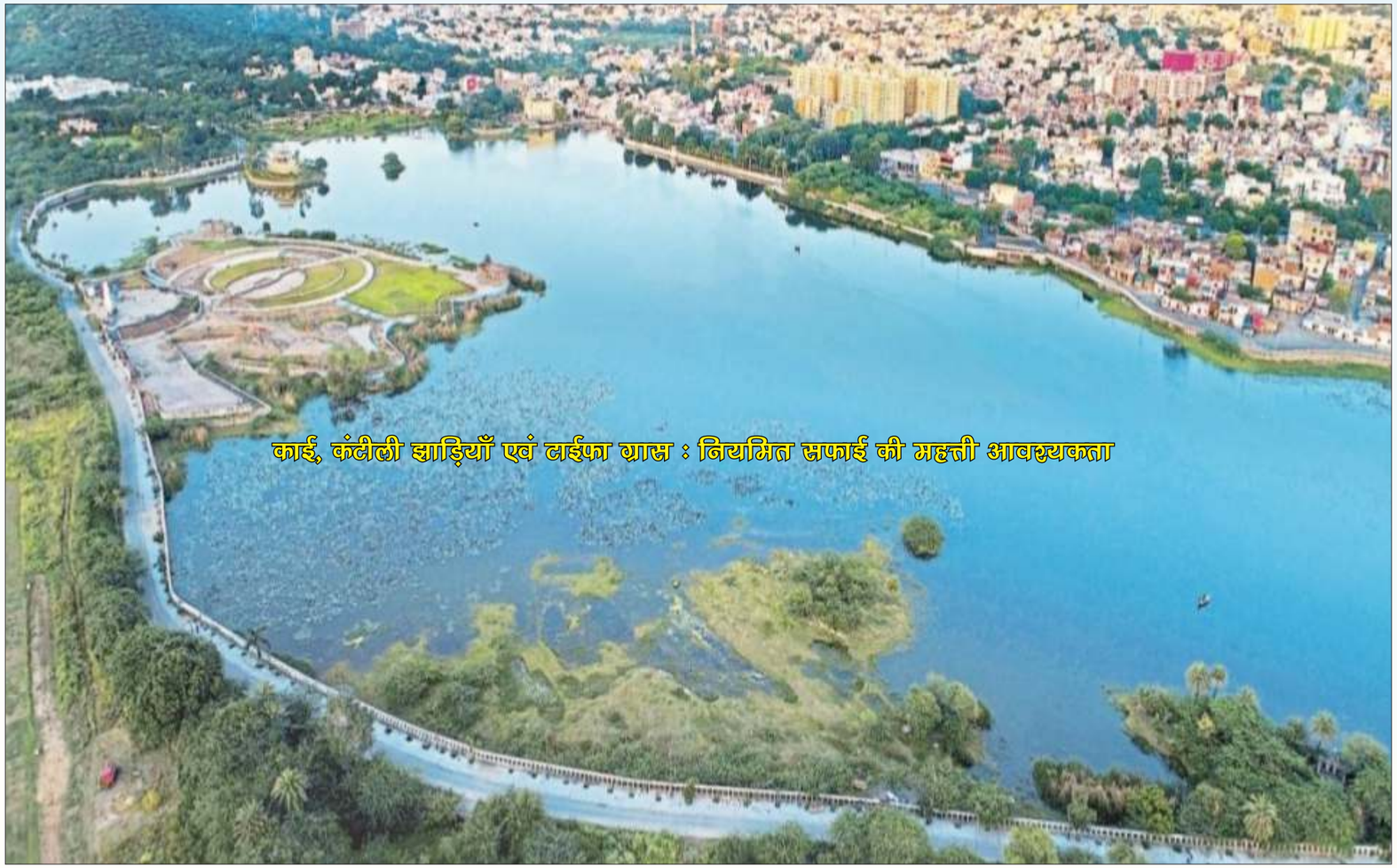

श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान मुक्ताकाश समवशरण तीर्थ : गोवर्द्धन सागर के दक्षिणी छोर के किनारे मुक्त आकाश के नीचे रचित समवशरण (धर्मसभा) की यह विशाल, अतीव सुन्दर एवं कलात्मक परिकल्पना विश्वभर की अपने सदृश्य रचनाओं में से एक अनुपम रचना है। लगभग 90,000 वर्गफीट क्षेत्रफल में बनी इस भूमि को गोलाकार द्वीप में आठ भागों में बाँटा गया है, जिन्हें ''अष्ट–भूमि'' के नाम से जाना जाता है। पहली भूमि 'चैत्यप्रासाद', दूसरी 'खातिका', तीसरी 'लता', चौथी 'उपवन', पांचवी 'ध्वजा', छठी 'कल्पवृक्ष', सातवी 'भवन' एवं आठवीं 'बारहसभा भूमि' कहलाती है। मध्य में तीन कटनियों पर अशोक वृक्ष के नीचे गंधकुटी में आठवें तीर्थंकर देवाधिदेव 1008 श्री चन्द्रप्रभ भगवान की मूर्ति स्थापित है। श्वेत संगमरमर में बनी 41 इंच उतंग, छत्र आभामंडल युक्त यह भव्य चहुँमुखी प्रतिमा अत्यन्त दर्शनीय, मनोहारी एवं अतिशयकारी है। चारों दिशाओं में विराजमान इस प्रतिमा के दर्शन मात्र से अनन्त सुख और शांति की अनुभूति होती है। दिगम्बर जैनाचार्य यतिवृषभ: द्वारा लगभग 2000 वर्ष पूर्व अपने ग्रंथ ''तिलोयपण्णति'' में समवशरण का बहुत सुन्दर वर्णन है एवं उसी को आधार मानते हुए खुले नैसर्गिक वातावरण में इस समवशरण की रचना करने का प्रयास धर्मनिष्ठ, समाजसेवी, सर्वोदयी, अध्यात्मप्रेमी एवं अनुग्राही श्रद्धेय श्री महावीर जी मिण्डा द्वारा पूर्ण समर्पण भाव से किया गया। अपने जीवनकाल के चौथे आरे की यह उनकी एक स्वर्णिम उपलब्धि रही। उनका दृढ़ विश्वास था कि हमारे पास जो भी सम्पत्ति है, सब नाशवान हैं, हम उसे इसी दुनिया

श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान मुक्ताकाश
समवशरण तीर्थ संपूर्ण परिसर

में छोड़ जाते हैं, यदि इसे दान कर दें तो अपने पुण्य में जोड़कर अपने साथ ले जा सकते हैं और यह अगले भव में भी हमारे साथ रहेगी। इसी भावना ने श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान मुक्ताकाश समवशरण तीर्थ की रचना को जन्म दिया।

श्री मिण्डा सा. ऐसे समवशरण की स्थापना करना चाहते थे जिसमें हम सब भागीदार बने, उसकी प्रत्येक भूमि में प्रवेश कर सकें, घूम सके, वहाँ बैठकर भगवान की पूजा एवं भक्ति कर सकें। शास्त्र वर्णन के अनुसार ऐसे समवशरण बड़े ही रमणीक होते हैं। इतने वैभवपूर्ण होते हुए भी यहां प्रभु इन सब में विलिप्त नहीं होते हुए अपने ध्यान में रहते हैं। ऐसा ही रमणीक व श्रद्धा का स्थान मिला गोवर्द्धन सागर के किनारे पर, जहाँ चन्द्रप्रभ मुक्ताकाश समवशरण तीर्थ का निर्माण किया गया। इसके विपरीत भारतवर्ष में करीब 2000 समवशरण की रचना बनी हुई हैं, वे सभी बन्द हाल में हैं, जिसके हम मात्र दर्शक ही बनते हैं।

इस मुक्ताकाश समवशरण के निर्माण में श्री महावीर जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लीला जी मिण्डा ने तन, मन, धन तीनों का दान किया। सन् 1993 से उन्होंने इसका कार्य प्रारम्भ किया और वर्ष 2006 में पूर्णता के साथ समवशरण तीर्थ की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। वर्तमान में इस समवशरण का रखरखाव एवं नियमित पूजा–अर्चना समर्पित भाव से श्री जयप्रकाश जी करवा एवं श्रीमती मणिबहन करवा द्वारा की जा रही है।

पशुपतेश्वर महादेव मन्दिर : मेवाड़ के 18वें महाराणा स्वरूप सिंह जी (ई.सं. 1842–1861) ने अपने शासनकाल में गोवर्द्धन सागर के उत्तरी–पूर्वी किनारे पर 'पशुपतेश्वर महादेव' नामक भव्य मन्दिर का निर्माण कराकर इसकी प्रतिष्ठा वि.सं. 1914 ज्येष्ठ शुक्ल नवमी (1 जून, 1857) को गोवर्द्धन विलास एवं ऐजन स्वरूप बिहारी मन्दिर के साथ की। यह मन्दिर वर्तमान में राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग के अधीन है।

पशुपतेश्वर महादेव मन्दिर

पशुपतेश्वर महादेव मन्दिर

मारवल वाटर पार्क : यह पार्क उदयपुर के दक्षिण में गोवर्धन सागर के पास सरस डेयरी के सामने सिटी रेलवे एवं बस स्टेशन से करीब 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। करीब 1.079 हैक्टेयर भूमि पर निर्मित यह वाटर पार्क पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण का केन्द्र है। इस पार्क में सभी आयु वर्ग के बच्चों एवं वयस्कों के लिए 26 वाटर स्लाईड्स लगी हुई हैं। पार्क में 4 वाटर पूल (एडल्ट पूल, किड्स पूल, एडवेन्चर पूल एवं वेव पूल) बने हुए हैं। पार्क में 250 फीट लम्बाई एवं 30 फीट ऊँचाई की रोमांचक स्लाईड्स भी है। पर्यटकों की सुविधा के लिए रेस्टोरेन्ट, फास्ट फूड कोर्ट आदि की व्यवस्था है। पार्क में एक लाख स्क्वायर फीट का मैरिज गार्डन भी है। यह राजस्थान का वर्तमान में सबसे बड़ा वाटर पार्क है।

किड्स पूल

एडल्ट पूल

रोमांचक स्लाइड्स

मारवल वाटर पार्क संपूर्ण परिसर का भव्य स्वरूप

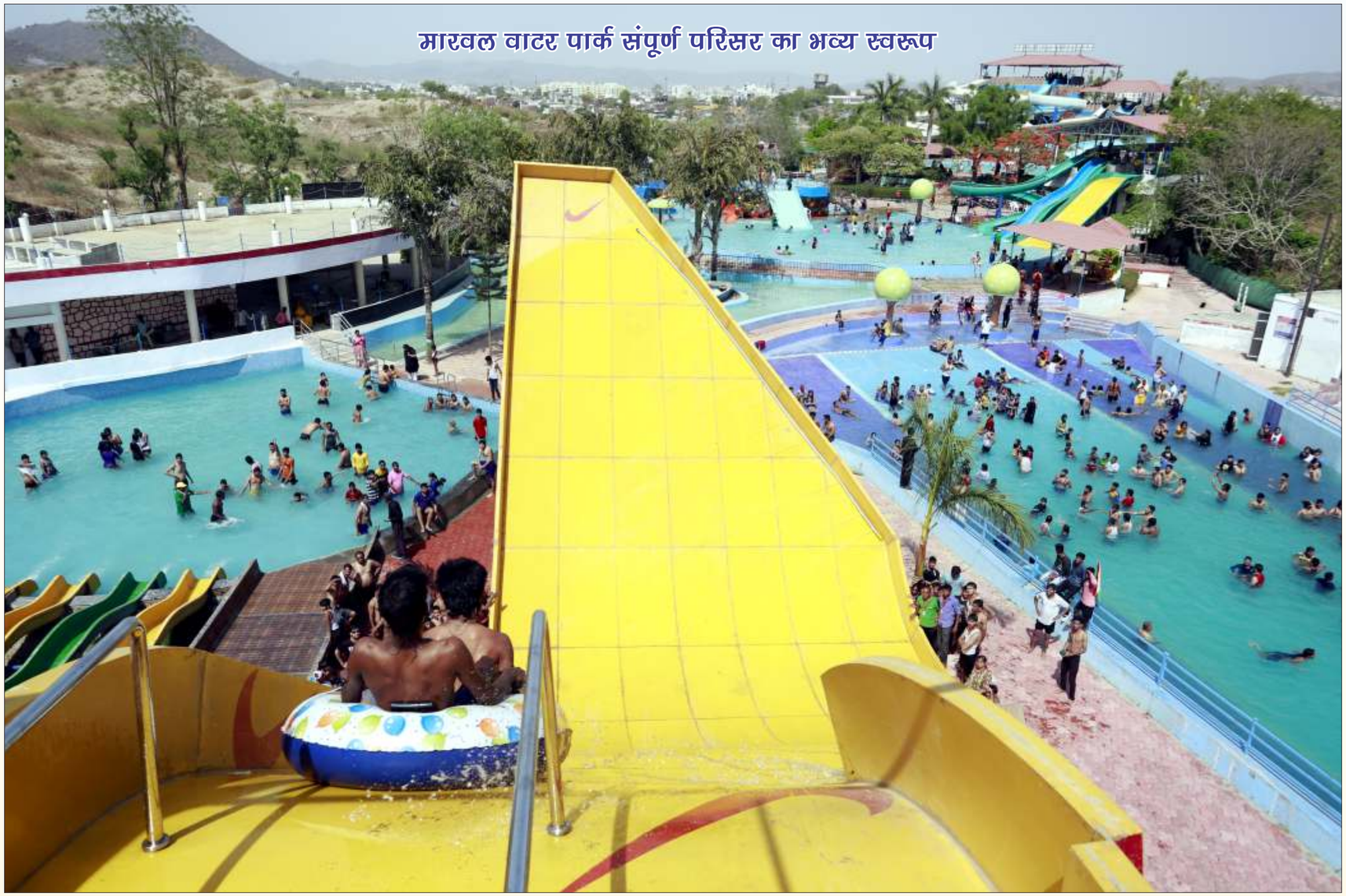

पार्क में स्थित वाटर स्लाइडर